



ॐ
 या गिनी या गिनि.
 प्रिदव. ३ दव.
 नवात्मा. कोथ.
 क स. श्रीक. लु.
 स्व कुट. मा न को.
 उ गु. लु.
 नि. लु.

१२८

श्री स भैरव पू. ॥ पद्योते

ASHA ARCHIVES

3429

१२८ ॐ श्रीहीमहीमात्या नमः ॥ सर्वसाधुग्रीसुकी कृत्य ॥ ठल
 रणधनं ॥ वृक्षो वृक्षो दयो स्वाहा ॥ आचनं ॥ ॐ श्रीं आत्म
 गत्याय स्वाहा ॥ ॐ श्रीं विद्याय स्वाहा ॥ ॐ श्रीं निवगत्या यः
 स्वाहा ॥ गंगां शृणु मानं इयं ॥ ॐ श्रीं हंसः श्रीकृमाहं पुम
 हारं नवाय नंदमय स्वाहा ॥ ॐ अर्चिगं सर्वकं श्रीं सेवति ॥
 यस्मै नमः ॥ गंगा गुननमस्तु नमः ॥ श्रीपवनमयुः श्रीमूकान

नमो श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 गोमाता गौरीयै नमः ॥ मत्तुल्यं त्वं त्वं त्वं त्वं त्वं त्वं ॥ श्रीगुरुभ्यो
 नमः किंकर्मलासनाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 संस्थाप्य हस्तं दत्वा यथा शक्यम् ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 धिः सततं कन्दः क्रमादिव ताज्जमान विनियोगः ॥ वक्ष्या
 जतिनाथ १०९ ॥ पृथीत्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं

वैष्णवधर्मोदविषयविष्टं वासनं कुरु ॥ अथ यित्वा सन उपनि
 श्रुत्वा नाना वस्त्रमृद्धं लब्धं दिग्गन्तं क्रमन विक्लिप्तम् ॥
 पिबेत्सुखं मृदुयाललाटश्रीकालमातिरक्तम् ॥ गंगाक्षेत्रः
 पूजनं ॥ ओं नन्दिन नमः ॥ ओं महाकालाय नमः ॥ पूज्यं ॥ ओं
 हर्षिण नमः ॥ ओं विनायकाय नमः ॥ दक्षिणे ॥ ओं वृथाय
 नमः ॥ ओं कदाय नमः ॥ उरुने ॥ ओं देवी नमः ॥ ओं वस्तु

ॐ नमः ॥ धृति ॥ ॐ लक्ष्मी नमः ॥ मध्या ॥ ॐ गलपंगयन
मः ॥ दक्ष ॥ ॐ मन्त्रस्य नमः ॥ वाम ॥ ॐ गङ्गाय नमः ॥ दक्ष
दक्ष ॥ ॐ अमृताय नमः ॥ ॐ अद्यानाय नमः ॥ दुर्ध ॥ ॐ द
हल्ये नमः ॥ नृगि ॥ ॥ हृमात्सादनधनं ॥ ॐ अथमर्थकु
यहृमाय हृमाहृ विस्स्थिताः ॥ यहृमा विष्णुकुरु विगन
॥ हृमा विवाहृ या ॥ हः अमु यरुहृ ॥ मापुययदिगुभनं ॥

॥ अथ गलगुनमूलनमस्तु ॥ ॐ गलगपंगयनमः ॥ वा
म ॥ ॐ गुनल्लानमः ॥ दक्ष ॥ ॐ श्रीगीरीमहीमात्यं नमः ॥
मध्या ॥ ॐ नमिनिमकुलवा विष्णुखननीनग्रामयगु ॥ ॐ या
सायामहृगुद्विः ॥ हृसः नृमिमेकुलमूलाधनात्कुलुलि
नीसमूलायष्टपिद्यासहृलाधिने गत्स्य जलसीन विहा ।
यगत्स्य जलसीन सहृमलिधूनसमानीयवद्रो जलसीन गत्स्य

वक्रि नासहानाहगसमानीयवक्रो वायोलीनंगसमाहयल
सहविशुद्धाकागलीनंगसमादाकागसहाहमनेस्वाकागली
नंगमनानादलीनंगनादधनिलीनंगविशवः॥ तत्सहमुदलकम
लजीवात्मायनमात्मानिवलाकिनकविशवयन॥ अथवा
मकूदोपाययनपुंविदित्य॥ ध्यानं॥ वामकूदिकिंनयायंय
नृषंककुलपरं॥ वक्रहत्यानिनल्लभः स्वर्गुभयमुज्ज्वलं॥ स

नापालदियकं गुत्रगत्यकटिद्वयं॥ गत्संगपदद्वयमङ्गु
त्यङ्गुपागकं॥ उयपागकनामागंनकल्लभप्रविलाचनं॥ रव
प्रचमधनंकुलंयायंकूदोविविक्तयन॥ यमिगिबीउ
नधाउलवानंमुजयनवामनाल्लभावायूनापूर्यःसुपायप
नृषदहंसेल्लभ॥ नमिगिबीउनवदुःषष्टिवानवृहन्नद
कनानयायायपूषंसदहंसेल्लभनवयन॥ गगावमिगिबी

३३

जनप्रियं गवानमादृतुं न ललाटवत् क्षास्मात् एकावर्तु मयी म
 मृगवर्तु पाश एस्मै प्राक्ष्य प्राक्ष्य मया सक्रमना वयवानि
 माय ॥ लानिगि वीजनदगवानमादृतुं नदरी कृत्य यनमात्मा
 नः प्रष्टमिगस्मात्मगत्वं गगा ३ हं कानगस्यादाकां गगावा।
 यं गस्याहं जं गस्यात् स्नानिगमय हृष्टस्थान कृत्तुलिनी स्थाय
 मित्वा वृक्षनं प्रस्थापय मात्मान्माह मिगिमनुज जीवात्मानं

प्रदीपकनिकाकात्रकलुत्नींदात्राद्रुदयकलुत्नींमूर्त्तौधान
स्थापयित्वास्त्रग्रीवंनिवर्त्तयसमस्तकिलिषंदवगानाधनया
ग्यविशवयसग ॥ १ ॥ गिरुगलुद्धिः ॥ ॥ गनः प्रागधुतिष्ठा
॥ ॐ अर्चोकोहसः साहग्रीहीमहीमाहोप्राप्ताः सर्वेन्द्रिया
विष्णुहागस्यसुखंविप्रंतिष्ठुस्त्वाहा ॥ २ ॥ गतामृष्टादि ॥
ॐ अस्यमनुस्य ॥ वामदवज्जु ॥ वयनमः ॥ निव ॥ ॐ अनूह

यच्छन्दस्तनमः॥ **मख**॥ ॐ श्रीमदवनायनमः॥ ॐ श्रीवीजा
यनमः॥ **यक्ष**॥ स्वाहागकयनमः॥ **यादो**॥ श्रीकीलकायन
मः॥ **सर्वरिद्र**॥ सर्वार्थिकाममाकार्थविनियोगः॥ वधाउ
लिनानमः॥ **न्यासः**॥ स्वाहाजमुद्ररुद्र॥ ॐ नृजमुद्राः
स्यानमः॥ श्रीगर्जनीत्यां स्वाहा॥ श्रीमध्यामायावष्ट॥ श्री
जनामिकायां रुद्र॥ श्रीहीमहीमायांकनिष्ठायावष्ट॥

स्वाहाकनकनृपृष्टायां जमुद्रयुरुद्र॥ **जववकुन्या**
सः॥ ॐ श्रीकुर्ववकाययविस्थिनमूरुयनमः॥ ॐ श्रीपू
र्ववकायाशनिमूरुयनमः॥ ॐ श्रीदक्षिणवकायशीम
मूरुयनमः॥ ॐ श्रीउरुववकायनकूलमूरुयनमः॥
ॐ श्रीपश्चिमवकायमहदवमूरुयनमः॥ **यववद्वद**
मादिषष्ठन्यासः॥ **गता**॥ माहका-न्यासः॥ ॐ जमुद्र

माह कात्यायनः ॥ ॐ वक्रो ह्यस्य नमः ॥ विन ॥ ॐ गाय
त्रीकुन्दस्य नमः ॥ मन्त्र ॥ ॐ श्रीमहीमाख्यो नमः ॥ द्वाद
शोऽथ अनेखा वीख्यो नमः ॥ गुह्य ॥ ॐ स्वप्रत्यः गक्रियः
नमः ॥ ॐ ज्यक् कीलकाय नमः ॥ सप्त ॥ ॐ मम
नीगुह्यार्थविनियोगः ॥ वक्ष्यते अतिनाम ॥ ॥ न्याः
मः ॥ ॐ श्रीमहीमाख्यो कं ॥ ॐ श्रीगुह्यो नमः ॥ ॐ श्रीमही

मायां व ॐ गुरु नीत्या स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मही मायां हं ॐ
 मय मायां व व ह ॥ ॐ जे ही मही मायां न ॐ जे ना मिहान
 मः ॥ ॐ उ ही मही मायां य ॐ उ वी व ह ॥ ॐ अ ही मही म
 यां य ॐ अः क व म न पृष्ठा यां अ म्ना य रु ह ॥ ॐ उ व ह ह
 यादि ॥ ध्यानं ॥ ॐ सिद्ध न का कि म मिता रु ने ल नि न य वि
 द्या क सु प्र मृ ग या ग व ना द धानं ॥ पा म्बु स्थिता रु व नी म

मिका ३२ नाशं ध्याय क नाकु धृग यस्तु क वं ह्यु मा लां ॥
नि ॥ ग नां ग म्मा ह का न्या सः ॥ ॐ वं नं धन मः ॥ अ धा
न ॥ ॐ वं रं मं यं नं लं न मः ॥ लि र ज ॥ ॐ उं रं लं नं धं दं नं
धं रं न मः ॥ ना रिः ॥ ॐ कं जं वं कं उं मं यं टं न मः ॥ क
दि ॥ ॐ जं १५ न मः ॥ अः ॥ ॐ कं ३२ न मः ॥ मू र्ति ॥ ध्या नं ॥
ॐ न व त्पू र्ण दू व कुं स क ल ति पि म श्री ला ल व कुं शि न शं

पु क्कालं का न र ह्वा न नि म कू ट उ टा कू ट य का पु न नो ॥ य
स्तु मे क पू र्ण कू र्ण म्ब न म पि द ध गिं लु क य द्वा म्ब ना छो वा
ग द की य द्वा व कुं कू व र न न मि ना वि कू य त्सा ध क न्दः ॥
॥ ग ना व हि म्मा ह का न्या सः ॥ ॐ जं श्री म ही मा र्णा न मः
॥ ल ला ट ॥ ॐ जं या लु यं यं य म ला र्णा न मः ॥ मू र्ख वृ क्क
॥ ॐ वं ल र हि डिं वि र्णा न मः ॥ द क ला च न ॥ ॐ

ॐ महावत्सव लिख्यो नमः ॥ वामलावन ॥ ॐ उं मा म
वं लं मृताख्यानमः ॥ दक्षक १६ ॥ ॐ उं कृष्ण ज न
वगीत्यां नमः ॥ वामक १६ ॥ ॐ उं कौ न य दो य दीत्यां
नमः ॥ दक्षनासिका ॥ ॐ उं ध म्मानि ऊ प ल्य वगीत्यां न
मः ॥ वामनासिका ॥ ॐ उं कामदवनगीत्यां नमः ॥ दक्षग
१६ ॥ ॐ उं म नू न मा नू तीत्यां नमः ॥ वामग १६ ॥ ॐ उं

वनदकामनू पितीत्यां नमः ॥ उद्धोष्ट ॥ ॐ उं कृत्तमर्दनी
कोनवनासिनीत्यां नमः ॥ अरधाष्ट ॥ ॐ उं उं की व का नि कि
नेत्यां नमः ॥ उद्धदन्त ॥ ॐ उं उं विनाट ॥ वनवनदात्यां न
मः ॥ अर्धः दन्त ॥ ॐ उं अं दो य दी ग ल नि मू र्खीत्यां नमः ॥
निप्रसि ॥ ॐ उं अः आ नन्दको म दीत्यां नमः ॥ मर्द्धि ॥ ॐ उं
कं न ग्न दि ग म्ब नीत्यां नमः ॥ दक्षारण ॥ ॐ उं खं दू य धि ना नि

वंगदाख्यानमः॥ कर्ष्यन् ॥ ॐ गं वं द्रु अ सु धा ख्यानमः॥ दक
 कनमूल ॥ ॐ दं दालयग्रगं गं ख्यानमः॥ दका सुलिमू
 ल ॥ ॐ दं दालानिबलदाख्यानमः॥ दका गुत्थारय ॥ ॐ
 ॐ न ना क स नि य क ली ख्यानमः॥ वामा ॥ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ल मा दि य ध न दा ख्यानमः॥ कर्ष्यन् ॥ ॐ ॐ ॐ क ल क गु
 ल वा मू ल ख्यानमः॥ वामम तिवरन्ध ॥ ॐ ॐ ॐ न म द

ॐ मा ख्यानमः॥ वामा सुलिमूल ॥ ॐ ॐ ॐ दि या न मू कि
 दा ख्यानमः॥ अ क ल्यारय ॥ ॐ ॐ ॐ दि ग्वा ए न ग्ना ख्यानमः
 ॥ द क पा द मूल ॥ ॐ ॐ ॐ ना र ध य पा अ ल लि ख्यानमः॥ अ
 न नि ॥ ॐ ॐ ॐ द टा ल क य न ना द नी ख्यानमः॥ रु ल ॥
 ॐ ॐ ॐ पा लु वा ग्र ज पा अ ल लि ख्यानमः॥ वाम पा दा सु लि
 मूल ॥ ॐ ॐ ॐ ल ल लु ल ग य ज म दा ख्यानमः॥ अ गु लि अ

१॥ ॐ नमः शिवाय नमः ॥ वामनाय
नमः ॥ ॐ धर्मदाय नमः ॥ आनन्दानि ॥
ॐ कर्मलाय नमः ॥ गुह्य ॥ ॐ धर्मदाय
नमः ॥ वामनाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते
सनातनाय नमः ॥ ॐ गुह्य ॥ ॐ धर्मदाय
नमः ॥ दक्षाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते
सनातनाय नमः ॥ ॐ धर्मदाय नमः ॥

नमः ॥ वामनाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते
सनातनाय नमः ॥ ॐ धर्मदाय नमः ॥
नमः ॥ ॐ नमो भगवते सनातनाय नमः ॥
ॐ धर्मदाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते
सनातनाय नमः ॥ ॐ धर्मदाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते सनातनाय नमः ॥
ॐ धर्मदाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते
सनातनाय नमः ॥ ॐ धर्मदाय नमः ॥

[illegible]

तुका न्यासः ॥ १ ॥ गंगा द्वा वषट् न्यासः ॥ २ ॥ अथ नैवेद्यं
नैवेद्यं हस्ते कृत्वा कृत्वा दद्यात्ततः त्रिभिर्मन्त्रैः ॥ कन
यट् न्यासः ॥ ३ ॥ गंगा नैवेद्यं न्यासः ॥ ४ ॥ अथ कृत्वा नैवेद्यं
नमः ॥ ५ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ ६ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ ७ ॥
नीति नैवेद्यं नमः ॥ ८ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ ९ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ १० ॥
॥ ११ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ १२ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ १३ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ १४ ॥

॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ १५ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ १६ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ १७ ॥
नैवेद्यं न्यासः ॥ १८ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ १९ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ २० ॥
नैवेद्यं न्यासः ॥ २१ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ २२ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ २३ ॥
नैवेद्यं न्यासः ॥ २४ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ २५ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ २६ ॥
नैवेद्यं न्यासः ॥ २७ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ २८ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ २९ ॥
नैवेद्यं न्यासः ॥ ३० ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ ३१ ॥ अथ नैवेद्यं न्यासः ॥ ३२ ॥

भाषाविद्यारुच्यद्वयधीमहि ॥ नन्वावृद्धप्रकाशयाग
 ममप्रजापतिनिमूलनरत्नाधय ॥ अथहामान्या
 र्थमाशुवत्संख्येयदत्त ॥ अगतायधविधिनादीधरः
 यथान्वेयश्च ॥ अगताय ॥ यादस्यायनं ॥ ह्रीं प्रीतिं का व
 द्दहन्तुनमममुलं लिष्यन्तुन ॥ अगताय ॥ अगताय ॥ अगताय ॥
 अगताय ॥ अगताय ॥ अगताय ॥ अगताय ॥ अगताय ॥

[illegible]

[illegible]

१. मूलाद्यदर्शने १

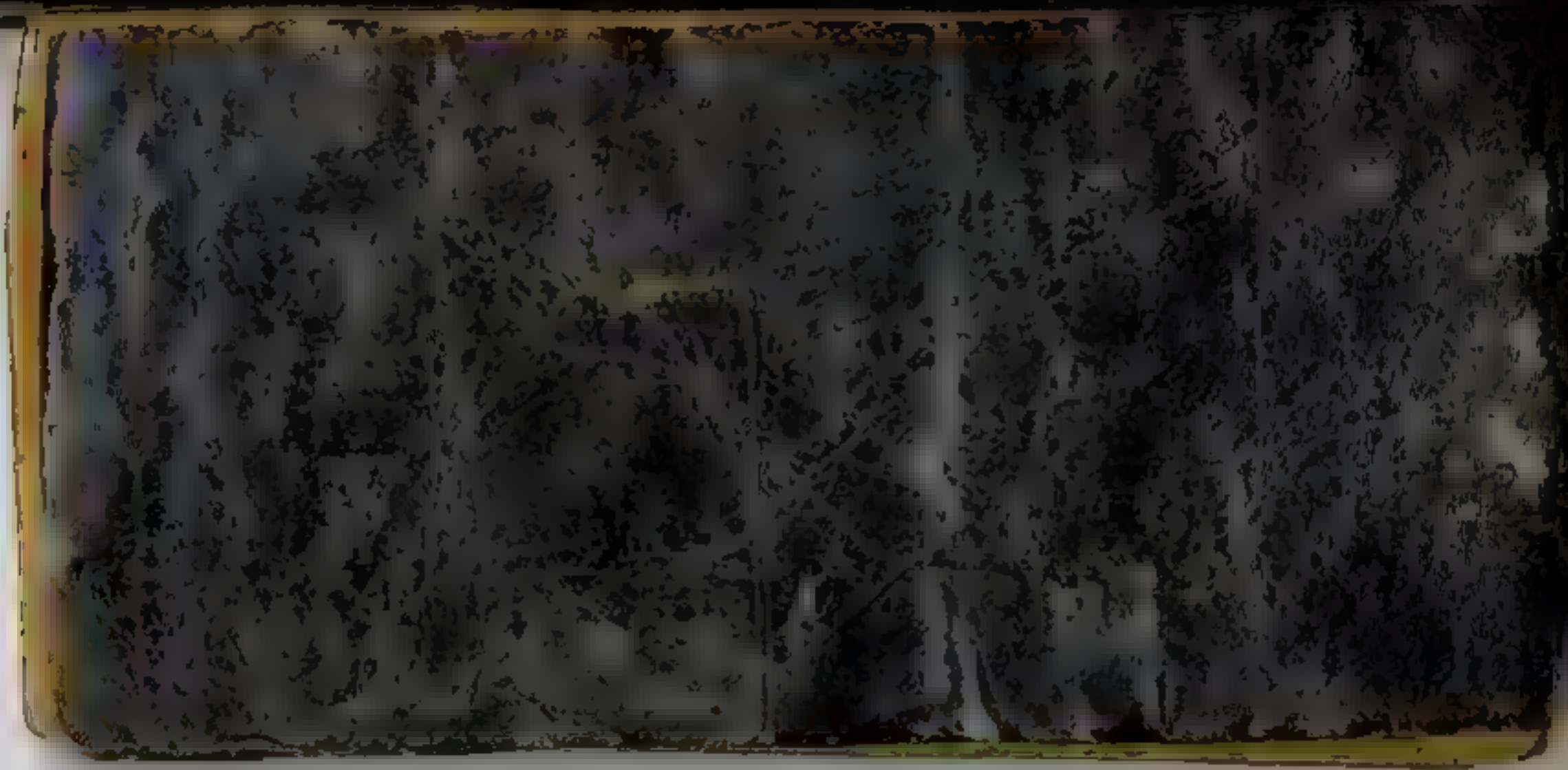
[illegible]

सुतं प्रसवस्वहा ॥ १ ॥ हा गवा प्रा मृतमपाने वा नमः ॥
मृतं यथा ॥ २ ॥ विधिना ता मृतादिन त्व ॥ ३ ॥ यथा ॥
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ४ ॥
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ५ ॥
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ६ ॥
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ७ ॥
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ८ ॥
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ९ ॥

लि. यद्यु मृता ॥ १ ॥ ॐ मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ २ ॥ ॐ मृतादिन त्व
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ३ ॥ ॐ मृतादिन त्व
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ४ ॥ ॐ मृतादिन त्व
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ५ ॥ ॐ मृतादिन त्व
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ६ ॥ ॐ मृतादिन त्व
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ७ ॥ ॐ मृतादिन त्व
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ८ ॥ ॐ मृतादिन त्व
मृतादिन त्व मृतादिन त्व मृतादिन त्व ॥ ९ ॥

महाधवी गंध हास्य अक्षरं सारं नमः ॥ नमः किं यक्षं मल
मंजली ललाटे लिखितं नमः ॥ सुनामां स मत्स्यपि अनां
रुद्राक्षरं धर्मं ॥ नत्न निर्माणं न कवचं अक्षरं नाक्षरं दक्षं उलं
॥ ५ ॥ नमः सनामाने स्थ ॥ ३ ॥ किं नादाह मरणादिनां ॥ नत्न
नामनी नमः सर्वकामफलप्रदं ॥ दाम्नी मानकां हंति
नवादिगुणं हंति ॥ सिगवकुमहाधवीगुणं धीनयः

शोधनां ॥ वनाहयकुनाहासादिगुणं धीनयः ॥ ३ ॥
कुमाकुनारगुणं धीनयः ॥ मक्षरं कणीहा
लक्ष्मीनां मानन्यसुखं विनी ॥ ३ ॥ आहं धीनयः ॥ ३ ॥
नमः सर्वकामप्रदं ॥ विधुवनां कामं धीनयः ॥ ३ ॥
नमः ॥ ३ ॥ देवद्वीवहनाय नमः ॥ ३ ॥
धरमारगुणं धीनयः ॥ ३ ॥



ASHA ARCHIVES

३२९

मम हव कुदहा यधी महि। तन्नान् दुष्टादयान् ॥
नञ्जलान् रुरु उदकादना नमहा हे नवा यमुची गकोलु
दरुणमयग नाधनाय द्या दुर्गती माधया दुष्टान्
पदी प्रिया नमहा हे मन्त्रि रुरु रुरु ही मन्त्रि माधया
या पूजा वति नञ्जल ॥ नमो वकु पूजा नञ्जल ॥
हि नमो वकु पूजा नञ्जल ॥ ॐ श्री गुरु नमः ॥ ॐ श्री गुरु नमः ॥

ओं हंसः सूर्यो यनमः ॥ ओं श्रीरामपालायनमः ॥ ओं हौं नि
 वायननमः ॥ वलि ॥ ॥ गताष्टदलपूजनं ॥ ओं लूं ॥ न्याय
 नमः ॥ नुवन्तुं ॥ मि ॥ मूं यम ॥ हूं नै ॥ अति ॥ पूजन्तु ॥ हूं क
 यन ॥ हूं ॥ श्रीमान ॥ अध ॥ हूं ॥ वलि ॥ ॥ गताष्टदलपू
 लपूजनं ॥ ओं गोप्येनमः ॥ ओं यथायनमः ॥ ओं सनस्रये
 नमः ॥ ओं मधयेनमः ॥ ओं सावित्रेनमः ॥ ओं विष्णवेनमः ॥

ओं अयायेनमः ॥ ओं ददमनायेनमः ॥ ओं स्वधायेनमः ॥ ओं
 स्वाहयेनमः ॥ ओं मायायेनमः ॥ ओं लोकमायायेनमः ॥ ओं रु
 द्रेनमः ॥ ओं उद्रेनमः ॥ ओं कद्रेनमः ॥ ओं आत्मदेवताये
 नमः ॥ वलि ॥ ॥ गताष्टदलपूजनं ॥ ओं हूं ॥ कृष्णपालायन
 मः ॥ ओं हूं ॥ गलगायनमः ॥ ओं हूं ॥ वदकनाथायनमः ॥ ओं
 हूं ॥ हूं ॥ योगिनीयानमः ॥ वलि ॥ ॥ गताष्टदलपूजा ॥ ओं हूं ॥

आदि ह्यायनमः ॥ प्रवं संभा म ॥ कीं अंगन ॥ औ वध ॥ औ
 हृदयाने ॥ औं तु कृष्णानि ॥ औं नाह ॥ औं कृत्तु ॥ औं स
 : अन्त ॥ वलि ॥ ॥ गंगा ॥ वेका ॥ हृत्ता वरुन ॥ औं अ ॥ ७
 हृत्तु कृत्तु नानमः ॥ प्रवं कं ॥ अग्नि यूनक ॥ वं ॥ अग्नि
 वगान ॥ ट ॥ अग्नि जिह्व ॥ ग ॥ काला ॥ य ॥ क ॥ नली ॥
 ॥ अं ॥ प्र क ॥ द ॥ ग ॥ हरी म ॥ रूप ॥ ह ॥ म ॥ य ॥ ए ॥ सून ॥ ल ॥ ह

टक ॥ कं अवन ॥ वलि ॥ ॥ गंगा ॥ शिगां गम दि ॥ वलि ॥ ॥
 प्रननावनल मरध्व ॥ औं ह्वानी गं क ना ह्यां नमः ॥ औं
 ल ॥ औं नाना य ॥ ह्यां नमः ॥ औं व ॥ हृदवकी ह्यां नमः ॥ औं न
 न्दय ॥ ह्यां नमः ॥ औं व ॥ न ॥ न ॥ ज ॥ नी ॥ ह्यां नमः ॥ औं पु ॥ हृ
 म्बन गि ह्यां नमः ॥ औं अ ॥ नि ॥ नू ॥ द ॥ उ ॥ ह्यां नमः ॥ औं डा ॥ ह्यां
 र्ध ॥ हृ ॥ धी ॥ ह्यां नमः ॥ औं अ ॥ हृ ॥ ह्यां नमः ॥ औं अ ॥ हृ ॥ ह्यां नमः ॥ औं

ॐ वननादि ॥ ॐ रूपादि ॥ ॐ सुहृदि ॥ ॐ स्मृतिनादि ॥
 ॐ लवनादि ॥ ॐ सुमन्त्रादि ॥ ॐ अमन्त्रादि ॥ ॐ रोग
 नादि ॥ वलि ॥ गनादिनाथ पूजनं ॥ ॐ जोरुद
 नादिनाथः ॥ ॐ ननासनायनमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ प्रणम्य
 नीलवर्णं गुणगणं वनं ॥ विरुसंकाटनां ध्या
 नमस्तु गनाय ॥ ध्यानं पूज्यं नमः ॥ ॐ यो गति ॥ ॐ ॐ ॐ

[illegible]

॥ ~~अने~~ ॐ ह्रीं क्लीं विनं वृं च नमो लिना
वना एव कने सा नू दा मा ला धने हने ॥ धन पू या ॥
य यां कु लि ॐ शं सः स पू र्ण क ल म य जू मृ ग म्ब नी
ना कि स हि मा य न मः ॥ व लि ॥ नी म्ब दि व कु रान मः
॥ सु म्ब पि रान मः ॥ गं म्ब दि ॥ अ या न व क व नी नि ॥ अ
लि म्ब दा ~~ना~~ ग मा कू ला मृ ग क ल म पू ज नं ॥ अ सः ॥ ॐ

आ ना दि ॥ ॐ त्रं का ना स ना य न मः ॥ ~~अने~~ ॥ ॐ ला का य न
नि ला द वी य य ना ग स पु रा ॥ स वृ न त्र वि जं गी अ म्ब का ह
ग वि गृ हा ॥ अ ह द म्ब उ ना ना य ह न र ला य ना ॥ ना ना न
स ध ना द वि य ला क ना य वि द न ॥ ख द्र वा ला क ना स व
क पा ल कू लि ग ध जं ॥ न धा न अ र ग थ अं टा न व म्ब व व
पु रं ॥ हृ ट कं ध नू पा ग अ र व दा ग अ र क म्ब लं ॥ गू ल म्

इ नवेनं व ग ता हि वा ह न व न ॥ म लु लं व द्यु अ त्वा नु न दीः
रू गा वि स धि ता ॥ य स न्दी पा न का न स च न वा मृ ता मृ का न
रु द्वा ॥ ध्या न क र्त्तु ॥ अ वा ह ना दि ॥ य यां ऊ लि ॥ वं अ
स र वा न र्नी कू ल कू ला य पा थू ॥ व लि ॥ ॐ हूं हूं हूं
हूं हूं हूं च न र्त्ता न मः ॥ व लि ॥ ग ना य व द्यु अ न ॥ ॐ
य द्या स ना य न मः ॥ ॐ सिं हा स ना य न मः ॥ ॐ म हि वा स ना य

न मः ॥ ॐ पु ण स ना य न मः ॥ ॐ नि तु ण स ना य न मः ॥ ध्या
ने ॥ ॐ ह म व लु वि न दा च नु जा ह्म द न आ नि ती ॥ अ न र द
ह सं स्थि त्वा म हि वा स न या दे नी ॥ ध्या न क र्त्तु न मः ॥ ॐ
का र ता दि य या ऊ लि ॥ वं ॐ ॐ कीं ना य क र्त्तु न मः ॥ ॐ
तु नि य म द नी हूं हूं स दान क र तां मां श म ॥ ॐ
ह न न मः ॥ ॐ ॥ व लि ॥ ॐ न र द व द्यु दि ॥ का र ता य नी

कुं व नः धनि ॥ वलि ॥ ॥ धस्तला पूजन धन दान ॥ ॥
मराः समस्ति पूजनं ॥ नुं श्रीसीमायहमनिवायाय
काहनायुधायमृगः ॥ ॥ हनायुधायमृगः ॥ ॥ हनायुधायमृगः ॥ ॥
कीधुयायुधायमृगः ॥ ॥ हनायुधायमृगः ॥ ॥ हनायुधायमृगः ॥ ॥
मः स्वाहा ॥ वलि ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥
नादि ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥

मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥
ली ॥ धनमृगः ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥
अपानमृगः ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥
॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥
मृदा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥
दि ॥ वलि मृदा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥ मराकोमारीयुजा ॥ ॥

लिङ्गं २ स्वाहा ॥ ॐ श्री गीमरीमा हां मं पृथ्वी
लिवलिपिनिगमहा पूजा वलिङ्गं २ ३ न ४ म न ५ ल ६
स्व ७ स्वाहि ८ महाजाम ग विप ग य वृका द ना य कृ श्री
पूजा य कृ नू की न मा वि र ल हूं हूं हूं नमः स्वाहा ॥ ३ ॥
सूर्य दीप मना नमनी देवी आनन्द कृपया लाय प्रथ
दीपालि पल्लमहा पूजा वलिङ्गं २ ३ न ४ म न ५ ल ६

हूं हूं हूं नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः शिवाय महावनयना क
मो य ज्ञात स्वाहा ॥ ३ ॥ श्री ३ म ध म नि न कि र नि न्ये व लिङ्ग
२ स्वाहा ॥ ३ ॥ अजिनां गमदि ॥ हं तु कादि ॥ अथ वृज्जदि
॥ अथ मया ॥ ३ ॥ ॐ श्री गीमरीमा हां मं पृथ्वी
नां क लय विवा नात वलिङ्गं २ स्वाहा ॥ ३ ॥ न क वं ग ॥
सम य वलि ॥ अथ ना ॥ ४ ॥ देवी गी ॥ श्री सृथी ॥ महावालो

ददत् ॥ ॐ अहमस्मिन्नुदीरति ॥ ॐ अउकानूकाने
 ॥ ॐ चन्दना ॥ दमूयल्लेधनं ॥ ॐ चंदनं पापनाशं च सिद्धि
 विभवदुनं ॥ ककुनं मोहनयेददध्याकनश्चरति ॥ ॐ द
 धूप ॥ शीघ्र ॥ रुलादि ॥ नेवद्य ॥ तानाघना ॥ ॐ धूलादि
 दधिनिधानं गच्छति च मनं ॥ ॐ गामादिमुखवासं च त्वा
 यतिष्ठं कानयन् ॥ ॐ यावद्वक्ति महीसामायावद्योयनवि

ग्रहाः ॥ तावत्पुनः कनयादीन् वृद्धां तावत्पुनः ॥ सु
 प्रसिद्धावनयाहवन्तु ॥ ॐ गमावकविलनअयंकानथ
 ॥ ॐ अंजीवीकीरीमायल्लहा ॥ ॐ अंजीवीकीरी
 दौक ॥ ॐ अंजीवीकीरी ॥ ॐ अंजीवीकीरी ॥ ॐ अंजीवीकीरी
 अहमय्यति ॥ ॐ गुक्तादिगुक्ताति ॥ ॐ अमभुतंकानयन्
 सायच ॥ ॐ गुक्तादिगुक्ताति ॥ ॐ अमभुतंकानयन्

मंगलं च ॥ आलुपुत्राय नमः ॥ अथ श्रीपद्मयनमः ॥ ॐ न
 मस्तुभ्यो देवी ॥ देवी संता नालुवता निती ॥ ॐ निवर्तक
 एतुपाय व्याधिरसुखदः ॥ अथ श्रीमहादेव नमस्तुभ्यो देवी ॥
 नमः ॥ यः प्रेमया मातु आस्ता ॥ ॐ श्रीनाथं वन्दे
 दिनकरकिनोर्ध्वं वन्दे विष्णुं सुताटं सानन्दं देवी श्री
 मद्रुविधनविगं सर्वमिच्छाधिकारं ॥ नमस्तुभ्यो देवी ॥
 अमहारीमा इति श्रीरव्यसुखसांकरनमोऽप्यु ॥ ॐ

गमसहिगं पावकं इन्द्रा नाना नूद्रावता नं प्रिगुवत्त
 विष्णो नवहृगनाथ ॥ ॐ उमायूगं कुरु विष्णो नवहृद
 वाधिनाथं वृषासनस्य ॥ प्रिगुलहं सत्त्वं एता नमस्तुभ्यो
 तं अयनं प्रवसा ॥ मेनेत्य ॥ ॐ ता नमस्तुभ्यो देवी ॥
 आह्लादगधनिती ॥ सत्त्वं वन्दे धनीयवीरु सुदय्येन मासुन
 ॥ अथ ॥ कवचं ॥ गगनाम ॥ सहस्रनाम ॥ माहमाया ॥

संवत् १८॥ कमासुति ॥ अथ गंधादि ॥ साष्टांगप्रत्येक ॥
 दधिः क्षीरानेच ॥ नगाप्रभुवलिग्रथा ॥ विधाननयनं
 कानय ॥ अथ बुद्ध्या ॥ ॐ नमो बुद्ध्या लवद्विः
 दहधमाधिकानेगा ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥

आभिर्गुह्यदिति ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥
 अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥ अथ बुद्ध्या ॥

३. लेखी नूतनः लेख्यमंगलायः

निमर्त्तविधायाविदक्रतधुवं ॥ शिकाटि रुलमानां गंधपू
 वृषोदाविवर्द्धनं ॥ अथ यजमानस्याः शुद्धयर्थं नि
 धाय चन्दनः सेंद्रमाहिनीदध्याकृतवीनजनस्यागि
 लकं कानययथा ॥ ३ ॥ चन्दनं पापनाशश्च सिन्दूरं
 श्लेयसंमपदं ॥ ककुलं माहने चैव दधिसुखाथिहिदि
 दं ॥ मणुलस्थदवस्य पूषामीनयीत्वा हृदि निनगि

तृषणं ॥ ३ ॥ अष्टपूर्वगतमिति ॥ गताकं एविस
 कुनं कानयित्वा गीके रुलदद ॥ ३ ॥ आधिविधिवि
 नागमयमृहानिवपुनयन ॥ धर्माधिका ममाकाय
 कलकं प्ररीकयन् ॥ गीके न विन्दतर्पणं कृत्वा दधः
 गाश्रुदधं दाहयन् ॥ गतागुनं दागुगुनं यजयित्वा सम
 र्थिनां ॥ गतागुनं दागुगुनं यजयित्वा सम

शंका नयन ॥ स्वयं नदि पादुवंदन ॥ दध्यै लवना क
नं ॥ ॐ ह्रीं वन्द्य निरंशस्य आत्मविन्द्य समप्रहं ॥ कीर्ति
दः स्वप्ननाम ॥ दध्यै गंग कृ हा सदा ॥ नगावलि विस्त
ऊ नो लु मनु ॥ ॐ क नो धार्थ यत् ॥ ॐ ग ऊ २ स न लव
ः स्वस्थाने न्न वगंतय ॥ न क २ महे ॥ अनियन ना वि उ न
यव ॥ ॥ संहानम दु या य मुं वानयत् ॥ ॥ को मा नी वि सुः

ऊ यित्वा स्थान क्रियः ॥ ॥ नगावलि म क पा यु नि ध म
वन्दना दी न्द्रु ऊ य य धा ॥ ॐ निर्व ल वा सि न्धे न मः ॥ ॐ
व च र लु ध न च रे लु ध नी लो न मः ॥ व लि ख स्वे स्थान कि
ध म ॥ ॥ ॐ पा पा मृ त स्व सि न नि गि स धा क पा न यत् ॥
न्या ला च म्य ॥ ॥ ह र्थ सा कि ॥ ॥ य न्द्रु द न्नि ऊ य धा स
स्व वि न ह ॥ ॥ ॐ मि त्त क जान ला क श्री सी म रे न दू का

पद्मिःसमाकः॥ ॥ प्रपूरुहं भूतन्यायाधायमिदं
सकं लिखेत् यमः ॥ ॥ ॥
समादयं च दधि चैव मधु सस्यि पंच हा कर्त्ता ॥ पंचामृतम्
हादि व्यंजनार्थं गन्धगोपयेत् ॥ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
सुगवता कुसाधी एव स्यात्तन्मृगतामूयमिममधिकं कु
धनूतयुक्तं ॥ वञ्चयन्ति वाहू कं चिगगदासं जालयं
वाननं रक्ता एकं यना यनं नमः लिखेत् श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
धनवाहिनी वक्षवती कल्याणदा वानतं ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

रात्रकलैषह्ययमहावाहकंहीमंहीमयनाहमेवहमनां
 दाशवंशमह ॥ १५ ॥ तेषुमिषकुशनावलदः ॥ १६ ॥ तनां
 स्थलीहयः ॥ १७ ॥ दनमन्वकृतहलीकादम्वनीयायिनं ॥ १८ ॥
 दिव्यकोनवनाजमधिक्रयादलुकावृद्धीहृदशेषममाव
 वनममिगंमंहीमसनंमनं ॥ १९ ॥ संशमधनृपांगनयविष
 दिव्योलीपूनाधलीधनादलुमहावनवगजामसमूहा
 ॥ २० ॥

सुव ॥ वनालपुमधवलीवलयिगधानिस्वयंमहयंरुथा
 नालयहीमसनरवगः ॥ २१ ॥ दातम्वजः ॥ २२ ॥ रावयग ॥ २३ ॥ हीमत्वच
 नमवविन्दयगलरुक्ताहजामीत्य ॥ २४ ॥ यनाहिंसिगुम
 यतादिनिदिनिप्रोयतहपाहीकनाः ॥ २५ ॥ गद्वस्थलनि
 र्जलधेशनामृगधवृणीवृणीहृयाहृममहाकीनवद
 लत्वयानमयमृरुः ॥ २६ ॥ हलाहृममहायुद्धमगम

प्रायश्चमहावाहिनी प्रायश्चरुटको नवद्विक्कट्यादलु
 कान्दयः ॥ चवद्विक्कट्यादलु गुमहामागद्विक्कासि
 यरासम्यत्तुहनिनावनप्रमथनकिनामकूलायस ॥ ५ ॥
 स्थलादहागिरीसंमध्वनधिनसुनादहिदहीगिजवंसम्या
 धमनं निधकूलनिधन ययरावंदधानं ॥ ननइनी
 गिवीधीवनलकूत्रकूलाडाकलंकं प्रयाही स्थवंशीम

स्वतः २

स्पवकुः समगममथनमादकिरागरेनवद्विक्कट्यादलु ॥ वामयस्या
 क्वचुलुस्वतस्वतंकाः ॥ १ ॥ हात्रागिरीमाध्वनकीधाः ॥
 निधेयुधमधमकधमाध्वनमादायवीनं ॥ साकाली
 दलुयालीकटकटविकट्यादलुवरागुदंहागमूया
 हीमसुनं कूत्रयगिनिधनात्यागवानरजासि ॥ हीमोद
 कमिदं पूज्यं यः प १० त्रयगाननः ॥ सस्ययुगन्तोहग

हं स्वाहा ॥ **ॐ** श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं सर्वगत्वं लभध्यामि सर्वज
न्महं यथा धर्मं संहारय ॥ **ॐ** यन्मात्रा यन्निवस हि मायधनात्मा
दिनिवा न्मं प्रदिनं सत्त्वात्मन सर्वगत्वात्मन सर्वगत्वं लभध्या
मिनिवाः हं स्वाहा ॥ **ॐ** आदित्य ॥ **ॐ** आदित्य लमि आगिव ह
मस्मिं आगिर्वा लमि बुद्धि ह मस्मिं जह मवा ह मं हं ह मस्मि
हा ॥ **ॐ** गित्त्वं लभधनं ॥ **ॐ** गमा जन्म मगत्त्वं लभधनं च ॥

व ४

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं आत्मगत्त्वं लभध्यामि स्वाहा
ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं विद्यागत्त्वं लभध्यामि स्वाहा
ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं गित्त्वं लभध्यामि स्वाहा ॥ **ॐ** श्रीं श्रीं
श्रीं श्रीं सर्वगत्त्वं लभध्यामि स्वाहा ॥ **ॐ** श्रीं श्रीं

ॐ अं वां कौं कूं कः कूं श्रीकाटलादमहास्यानां विधायक
 हादयपालरुचये कपिलोयुक्तदाराण्यसुवर्णिनयुक्ता
 लासुरवचरुयुक्ता कायवर्णांगेरुदकमूलप्रोक्षणयेन
 नकपात्रमासाहयमयविद्युत्काटिसमप्रहायत्रयोरहित
 गवत्तुल्यवपुषो यथापन्नानां बलिहृत् ॥ १ ॥ पुनरुपम
 लक्ष्म्यश्चैवाहिमहाजमलाविधायक सर्वभूतहितं कुरु ॥

ॐ कूं रुद नमः स्वाहा ॥ वासुदेवाय नमः ॥
 ॐ श्रीसंजीवनीसंकाशाय नमः ॥ पुनरुपम
 का कं काटला कपिलोयुक्तदाराण्यसुवर्णिनयुक्ता